विचार बिन्दु

त्याग यह नहीं कि मोटे और खुरदरे वस्त्र पहन लिए जायें और सूखी रोटी खायी जाये, त्याग तो यह है कि अपनी इच्छा अभिलाषा और तृष्णा को जीता जाये। –सुफियान सौरी

सुरक्षित आहार बेहतर स्वास्थ्य का आधार

सुरक्षित आहार हमारे शरीर को स्वस्थ रखने के साथ ऊर्जा बढ़ाता है। शरीर के कार्यों के तरीके में सुधार करता है। प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करता है और वजन बढ़ने से रोकता है। स्वस्थ जीवन के लिए स्वस्थ भोजन करना जरूरी है। स्वस्थ व्यक्ति वह है जो शारीरिक और मानसिक तौर पर स्वस्थ और प्रसन्न है और जीवन का आनंद लेता है। पर्याप्त पोषण, पीने का सुरक्षित पानी, सफाई, निजी स्वच्छता, साफ पर्यावरण और स्वस्थ जीवनशैली अच्छा स्वास्थ्य प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण हैं। स्वस्थ और पौष्टिक भोजन के बिना कोई भी व्यक्ति जल्दी बीमार पड़ सकता है। कोरोना के दौरान हमने इस बात को भी बेहतर तरह से समझ लिया है कि संतुलित और सुरक्षित आहार का क्या महत्व है। पोषक तत्वों से परिपूर्ण सेहतमंद और सुरक्षित आहार के ज़रिए जीवन को स्वस्थ बनाया जा सकता है। साथ ही खाद्य उत्पादन को सुरक्षित और टिकाऊ बनाकर और बाज़ार तक पहुंच और ठाामीण क्षेत्रों में आर्थिक विकास और ग़रीबी उन्मूलन में सहायता मिल सकती है। फल और सब्जियां स्वस्थ और संतुलित आहार का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। ताजे फल कई तरह के विटामिन, खनिज और पोषक तत्वों से भरे होते हैं और नियमित रूप से इनका सेवन करने से आपकी प्रतिरक्षा प्रणाली को बढ़ावा मिल सकता है।

मानव जीवन के लिए खाद्य पदार्थों की सुरक्षा अति महत्वपूर्ण है। लोगों को सुरक्षित और पौष्टिक भोजन का प्रकृति प्रदत अधिकार है। राज्य का दायित्व है कि प्रकृति की ओर से प्रदान किए गए अधिकारों का संरक्षण और संवर्धन करे। खाद्य सुरक्षा का अधिकार भी इसमें शामिल है।

सुरक्षित आहार को लेकर दुनियां में व्यापक हलचल मची है। यह आहार हमारी रसोई और आसपास मौजूद है। हम जंक फूड की ओर भाग रहे है जो हमारे स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

कोरोना महामारी ने हमारा ध्यान सुरक्षित आहार की ओर दिलाया है। हमारे पास मौजूद सुरक्षित आहार का समुचित उपयोग कर लेते तो किसी टॉनिक वगैरह पर अंधाधुंध पैसे बहाने की जरुरत ही नहीं पड़ती। कोरोना से ग्रस्त लोगों को बीमारी से उबरने के लिए पौष्टिक आहार की जरूरत पड़ती है। दूध, दही, पनीर, दाल, चना, राजमा, हरी सब्जी, सोयाबीन, फल, ड्राई फ्रूट्स, अंडा, मछली आदि प्रोटीन के अच्छे स्त्रोत होते हैं। एक रिपोर्ट में बताया गया है की विश्व में हर साल लाखों लोगों की मौत सुरक्षित आहार न लेने की वजह से हो रही है। ये मौतें जागरूकता के अभाव में हो रही है जबकी दुनियां में सुरक्षित और पौष्टिक आहार की कोई कमी नहीं है।

आहार हमारे जीवन की प्राथमिक आवश्यकता है। जब तक आहार में पौष्टिक तत्व नहीं होंगे तब तक शरीर का विकास उचित प्रकार से नहीं होता है। हमारे देश में गरीबी एवं अज्ञानता के कारण भोजन में पौषक तत्वों की कमी रहती है। इन्ही कारणों से बच्चों में कुपोषण एवं वयस्कों में कई विकार उत्पन्न होते है।

गरीब और अमीर सभी वर्ग के लोग पौष्टिक और सुरक्षित आहार नहीं लेने से अकाल मृत्यु को प्राप्त हो रहे है जो बेहद चिंताजनक है। दुनिया में प्रचुर खाद्यान्न उत्पादन होने के बावजूद लोगों के लिए स्वास्थ्यपरक आहार आज भी एक बडी चुनौती बना हुआ है। इसके चलते प्रतिवर्ष 1.10 करोड लोगों की समयपूर्व मौत होने का अनुमान है। स्वास्थ्यकर भोजन अपनाने से इन मौतों को रोका जा सकता है। रिपोर्ट में 190 देशों के खान-पान के आंकडे एकत्र किए गए हैं।

रिपोर्ट के अनुसार बीमारियों के 11 बडे कारणों में खान-पान से जुडा खतरा सबसे बडा है।

कोरोना भी आज उसी खतरे में शामिल हो गया है। शिशु व गर्भवती महिलाओं में संक्रमण के समय में कुपोषण का स्तर नहीं बढे इसके लिए उनका खानपान बेहतर होना चाहिए। सुरक्षित आहार का गहरा संबंध शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता से है। मजबूत रोग प्रतिरोधक क्षमता संक्रमण के जोखिम को कम करता है और यह कई प्रकार की संक्रामक व गैरसंक्रामक बीमारियों से बचाव करता है।

आहार हमारे जीवन की प्राथमिक आवश्यकता है। इससे हमें ऊर्जा मिलती है। जब तक आहार में पौष्टिक तत्व नहीं होंगे तब तक शरीर का विकास उचित प्रकार से नहीं होता है। आहार में पौष्टिक तत्व होने आवश्यक है जो शरीर का वद्धर्न करें। हमारे देश में गरीबी एवं अज्ञानता के कारण भोजन में पौषक तत्वों की कमी रहती है। इन्ही कारणों से बच्चों में कुपोषण एवं वयस्कों में कई विकार उत्पन्न होते है। आहार में कार्बोज, प्रोटीन, वसा, खनिज लवण एवं विटामिन विद्यमान हो तभी व्यक्ति की शारीरिक वृद्धि एवं विकास होगा। इस प्रकार के आहार में जल एवं फाइबर की भी पर्याप्त मात्रा होनी चाहिए। इंडियन मेडिकल एसोसिएशन के अनुसार भोजन में अनाज और दालों का अनुपात 5 और 1 होना चाहिए। लेकिन भारतीय आहार में भोजन का 60 प्रतिशत हिस्सा तो अनाज का होता है। अनाज भी प्रोटीन के अच्छे स्त्रोत हैं। लेकिन उनमें आवश्यक अमीनो एसिड नहीं होता हैं। मिथियोनीन नामक प्रोटीन दालों में मिलता है, जो विकास और ऊतकों की मरम्मत के लिए आवश्यक है।

–अतिथि संपादक,
बाल मुकुन्द ओझा
(वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार)

पुरानी बावड़ियों को 'भागीरथों' का इंतजार

विनोद पाठक

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हाल में अपने 'मन की बात' कार्यक्रम में 'जल' और 'जल संरक्षण' की दिशा में हो रहे विशेष प्रयासों की चर्चा की। उन्होंने सदियों पहले बनवाए गए स्टेप वेल्स (बावड़ियों) की विरासत का खासतौर पर जिक्र किया। प्रधानमंत्री ने बताया, कैसे राजस्थान के उदयपुर की 'सुल्तान की बावड़ी' उपेक्षा के कारण धीरे-धीरे वीरान होती गई और कूड़े-कचरे के ढेर में तब्दील हो गई। कैसे कुछ युवाओं ने सुल्तान की बावड़ी की तस्वीर और तकदीर बदलने का संकल्प लिया तथा 'सुल्तान से सुर-तान' मिशन को अंजाम दिया। चार्टर्ड अकाउंटेंड इन युवाओं का प्रयास है कि अब सुल्तान की बावड़ी न केवल साफ हो गई है, बल्कि वहां सुर और संगीत का कार्यक्रम होता है। विदेशी भी इसे देखने आने लगे हैं। प्रधानमंत्री ने केवल एक बावड़ी का जिक्र किया, लेकिन राजस्थान और गुजरात में आज भी सैकड़ों बावड़ियां हैं, जो 'भागीरथ' का इंतजार कर रही हैं।

दरअसल, बावड़ी एक गहरा कुआं अथवा बड़ा कुंड होता है, जिसमें पानी की सतह तक जाने के लिए सीढ़ियां बनी होती हैं। अंठोजी में इसे स्टेप वेल कहते हैं। प्राचीन शिलालेखों में बावड़ी के संस्कृत रूप वापी का उल्लेख प्रथम शताब्दी में मिलता है। आमतौर पर बावड़ी में देवी-देवताओं जैसे गणेश, हनुमान, दुर्गा, शिव-पार्वती, विष्णु, ब्रह्मा, भैरव, सरस्वती, वरुण आदि की मूर्तियों को दीवार, प्रवेश द्वार आदि पर स्थापित किया गया, ताकि जब भी कोई पानी भरने के लिए बावड़ी में आए तो पहले देवी-देवताओं को नमन कर उनका पूजन करे। बावड़ी परिसर में यात्रियों और भक्तों के विश्राम की सुविधाएं भी बनाई गईं। कई बावड़ियों में मंडप भी बने हैं, जिनमें गीत-संगीत के अलावा वैवाहिक कार्यक्रम भी आयोजित होते रहे हैं।

राजस्थान जैसे शुष्क क्षेत्र में आठवीं सदी के बाद बावड़ियों का निर्माण शुरू हुआ। राज्य के करीब-करीब सभी जिलों जयपुर, डूंगरपुर, करौली, बूंदी, कोटा, उदयपुर, बीकानेर, प्रतापगढ़, झुंझुनूं, टोंक, जोधपुर आदि में बावड़ियां और कुंड हैं और इनकी संख्या 3000 से अधिक है। बूंदी जिले में 70 से अधिक बावड़ियां हैं और बूंदी शहर को स्टेप वेल्स ऑफ सिटी के नाम से जाना जाता है। दौसा की चांद बावड़ी (आभानेरी), बूंदी की रानीजी की बावड़ी जैसे बावड़ियां भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के अधीन हैं और इन्हें हर वर्ष लाखों पर्यटक देखने आते हैं। हालांकि, सभी बावड़ियों की ऐसी किस्मत नहीं है।

आजादी के बाद कुछ बावड़ियों को केंद्र सरकार ने भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के अधीन ले लिया, लेकिन अधिकांश बावड़ी अपने हाल पर यूं ही छोड़ दी गईं। सरकार और समाज की उपेक्षा का शिकार कई बावड़ियां जर्जर हो चली हैं और वीरान पड़ी हैं। अब आजादी के अमृत महोत्सव में नरेंद्र मोदी सरकार ने जलस्त्रोतों की सुध लेने के लिए अमृत सरोवर योजना शुरू की है, जिसके तहत राजस्थान के जोधपुर की 403 साल पुरानी तापी बावड़ी का पुनरुद्धार शुरू हो गया है। बावड़ियों का कितना जन-जुड़ाव था, यह इस बात पता चलता है कि वर्ष 1618 में बनी तापी बावड़ी के लिए एक कहावत प्रचलित है, 'तापी बावड़ी अर निमलो की, नि देख्यो सो जीवता ई मुऔ' यानी तापी बावड़ी और निमला कुआं को नहीं देखा.. जाना..पहचाना...तो जिंदा होने के बाद भी मरा समान है। उनदिनों जोधपुर में आने वाले लोगों के लिए मुफ्त में ठहरने के स्थान के रूप में तापी बावड़ी एक उपयुक्त स्थान था। विडंबना यह है कि निर्माण के 404 साल में केवल दूसरी बात तापी बावड़ी की सुध ली गई है। इससे पहले तापी का वर्ष 1925-1926 में जीर्णोद्धार हुआ था।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बावड़ियों के पुनरुद्धार की कहानी सुनाकर निश्चित ही लोगों को प्रेरित करने का काम किया है। सरकार की अमृत सरोवर योजना ने जर्जर और पुराने जलस्त्रोतों के पुनरुद्धार की नई उम्मीद जगाई है, लेकिन बिना समाज की जागरुकता के यह कार्य लगभग असंभव है, क्योंकि अभी एकबार तो सरकारी प्रयासों से जलस्त्रोत

साफ हो जाएंगे, लेकिन भविष्य में इनका वैभव बना रहे, इसकी गारंटी समाज ही ले सकता है। सरकार को इन जलस्त्रोतों या बावड़ियों को पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप (पीपीपी) मॉडल पर दे देना चाहिए या फिर सक्षम लोग इन्हें गोद ले सकते हैं, ताकि आगामी पीढ़ियां अपने पूर्वजों के महान कार्यों को देख सकें। देखना यह होगा कि प्रधानमंत्री की अपील कितना असर दिखाती है...।

विनोद पाठक,
वरिष्ठ पत्रकार

टोडाभीम नगरपालिका में 18 माह में बदले आठ अधिशाषी अधिकारी

टोडाभीम, (निस)। कस्बे की पालिका के वार्ड 20 निवासी आप पार्टी के करौली जिला प्रभारी आशाराम मीना एवं वार्ड 18 के पार्षद शिब्बूराम मीना व वार्ड 19 के पार्षद कैलाश मीना ने बताया कि पिछले 18 माह से टोडाभीम पालिका में 8 अधिशाषी अधिकारियों के बदलने के बाद भी अधिशाषी अधिकारी का पद रिक्त चल रहा है परंतु संबंधित विभाग द्वारा अब तक अधिशाषी अधिकारी नहीं लगाया है । जिससे प्रशासन शहरों के संग अभियान में संचालित नवीन पट्टा फाइलें निर्माण स्वीकृति मोरगेज एनओसी फ्री होल्ड पट्टा आदि के कार्य अटके पड़े हैं। पालिका के अधिशाषी अधिकारी का चार्ज नगर परिषद करौली नरसीराम मीना के पास होने व उनके पालिका कार्यालय में नही बैठने के कारण आमजन को रोजाना पालिका के चक्कर काटने पर मजबूर होना पड़ रहा हैं।

पार्षद कैलाश मीना व शिब्बूराम मीना सहित आप पार्टी के करौली जिला प्रभारी आशाराम मीना ने बताया कि पालिका में प्रशासन शहरों के संग अभियान के अंतर्गत जारी किए गए लोगों के पट्टे अटके पड़े हैं साथ ही अधिशाषी अधिकारी का पद रिक्त होने के कारण पालिका के द्वारा जारी किए गए पट्टे के पंजीयन प्रमाण पत्र का तहसील कार्यालय में पंजीयन नहीं हो पा रहा है। कई लोगों को ऋण लेने के लिए भी काफी समस्या उत्पन्न हो रही हैं। वही जन्म मृत्यु, नवीन राशन कार्ड का पंजीयन आदि के कार्य भी रुके पड़े हुए हैं। राज्य सरकार अगर पालिका में अधिशाषी अधिकारी के पद पर अधिकारी नियुक्त नहीं करती है तो पालिका क्षेत्र वासियों एवं जनप्रतिनिधियों द्वारा आंदोलन किया जायेगा। पार्षद कैलाश मीना ने बताया कि उनके द्वारा मुख्यमंत्री सहित डीएलबी को पत्र भेजकर अति शीघ्र पालिका टोडाभीम में अधिशाषी अधिकारी लगवाया जायेगा। कस्बे की पालिका में अधिशाषी अधिकारी के हालात यह हैं कि इस बोर्ड के 18 माह के कार्यकाल में अब तक 8 अधिशाषी आए और आकर चले गए। पालिका के अधिशाषी अधिकारी का कार्य नरसी लाल मीना देख रहे हैं।

रक्तमणि कार्यक्रम 2481 दिनों से लगातार जारी

कोटपूतली, (निसं)। भाजपा नेता मुकेश गोयल की पहल पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के जन्म दिवस 17 सितम्बर 2015 से शुरू हुआ रक्तमणि कार्यक्रम 2481 दिनों से लगातार जारी है। रक्तमणि अभियान में बुधवार को राजकीय बी.डी.एम. ब्लड बैंक कोटपूतली में भाजयुमो जिला अलवर उत्तर के जिलामंत्री अजय गुर्जर पुत्र प्रकाश रावत ने अपने जन्मदिन पर मित्र हिमांशु चौधरी, ललित सराधना, दिनेश कुमार, कालू गुर्जर माजरा, प्रमोद गुर्जर, मनोज कुमार, धनवंत यादव, जग्गी गुर्जर, देवीसहाय गुर्जर, विक्रम सिंह, हितेश सिरोहीवाल, प्रमोद कुमार, हवासिंह चनेजा, धौलाराम चन्देला, राहुल पटेल, पिन्टू यादव, सुनिल कुमार सहित 27 युवाओं ने स्वैच्छिक रक्तदान किया और गौरवशाली रक्तमणि बने।

इस अवसर पर रक्तमणि संयोजक मुकेश गोयल ने रक्तदाताओं को धन्यवाद देते हुए कहा कि जो रक्त आप दान करते हो वो किसी और को जिंदगी जीने का एक दूसरा मौका देता है। युवा नेता अजय गुर्जर ने अपने युवा साथियों से नियमित रक्तदान करने की अपील की है। उन्होंने कहा कि रक्तदान करने से किसी प्रकार की कमजोरी नही आती है बल्कि हमारा स्वास्थ्य मजबूत होता है। इस अवसर पर रक्तमणि संयोजक मुकेश गोयल, सीताराम रावत, महिपाल गुर्जर, रवि पंडित, संजय गुर्जर, राजेश रावत, सोनू यादव, बलवंत, नरेश, उमेश, सरजीत यादव, राहुल पटेल, निखिल, दारासिंह उपस्थित रहे।

फायर ब्रिगेड को मिलेगी 14 करोड़ की हाइटैक मशीन

अजमेर, (कास)। शहर की बहुमंजिला इमारतों में भी आसानी से आग बुझाई जा सकेगी। इसके लिए अग्निशमन के बेड़े में 14 करोड़ की लागत से तैयार करवाई गई एरियल हाइड्रोलिक प्लेटफार्म मशीन शामिल होगी। इसके लिए फिनलैंड की कंपनी को कार्यादेश जारी कर दिया गया है।

चीफ फायर ऑफिसर संजय शर्मा ने बताया कि इस मशीन की सहायता से 60 मीटर ऊंची इमारत पर भी आसानी से आग को बुझाया जा सकेगा। इस मशीन में नीचे की ओर हाइड्रोलिक प्लेटफार्म बना होता है, जो फायर के समय कार्मिकों को लेकर ऊपर की ओर जाता है। प्लेटफार्म होने से हादसे की आशंका भी नहीं रहती है। पिछले लंबे समय से इसकी मांग की जा रही थी।

- **बड़ी-बड़ी इमारतों में भी आसानी से लोगों की जान बचा पाएगी टीम**
- **फिनलैंड की कंपनी को कार्यादेश जारी किया**

यह मिल जाने के बाद अब ऊंची इमारतों में रेस्क्यू के दौरान होने वाली परेशानियों से निजात मिल जाएगी। संजय शर्मा ने बताया कि वर्तमान में अग्निशमन बेडे में 32 वाहन है। इसमें 4 कंडम हो चुके है। 20 छोटी बड़ी गाड़ियां, 5 मोटरसाइकिल व 3 जीप है। वर्तमान में आग बुझाने के लिए 10 मीटर ऊंची सीढी ही है। शहर का विस्तार हुआ है और काफी बहुमंजिला इमारत बन चुकी है। इसकी जरूरत को लेकर स्वायत्त शासन विभाग को लिखा गया और सरकार ने अब इसकी स्वीकृति देते हुए फिरनलेंड की कंपनी को वर्क ऑर्डर जारी कर दिया है।

फिर लौटने लगा है दुनिया में गायब हुआ धर्म?

मनुष्य आदिकाल से किसी न किसी रूप में धर्म के किसी ने किसी स्वरूप पर प्रभाव को अपने जीवन से बांधे हुए है। इसी जुड़ाव के साथ वह अपने जीवन का अर्थ खोजने की कोशिश भी करता है। लेकिन धर्म है कि अपने विकास के साथ विकराल और बेकाबू होता चला गया नतीजा हम सब ने देखा है। धर्म के नाम पर पनपने वाले पाखंड और यूरोप में स्वर्ग जाने के सर्टिफिकेट भी बिकने लगे। बस यहीं से धर्म को लेकर पूरे विश्व में एक नाराजगी या यूं कहे धर्म के प्रति विमोह भी बढने लगा। आगे बढ़कर धर्म जब शोषण का हथियार बन गया तो धर्म के विरुद्ध बगावत की आवाज भी उठने लगी और लोगों ने धर्म के नाम पर होने वाले प्रखंडों को नकारते हुए सीधे-सीधे ईश्वर के अस्तित्व को ही नकार दिया।

बीसवीं सदी में साम्यवाद जमीन पर उतर आया और उसने सबसे पहले और करारी चोट धर्म को ही दी। धर्म को न केवल नकारा गया बल्कि समस्त धार्मिक क्रियाओं को प्रतीकों को मंदिरों को मस्जिदों और गिरजा घरों को ध्वस्त कर दिया गया। धर्म के नाम पर रोजी-रोटी कमाने वालों की बुरी हालत हो गई जिन देशों में साम्यवादी सरकारें थी वहां नई सरकारों के अस्तित्व के साथ ही धीरे धीरे धार्मिक व्यवस्थाओं का अनुरोध होने लगा है। आज रूस में चर्च फिर से खड़े होने लगे हैं पुराने पूजा घरों को साफ कर नए तरीके से चमकाया जा रहा है। कहने को तो चीन आज भी अपने आप को कम्युनिस्ट देश घोषित किए हुए हैं लेकिन चीन में धर्म के आधार पर

राजेन्द्र मोहन शर्मा

अधिकांश लोग अपने आपको किसी ने किसी धर्म के साथ न केवल जोड़े हुए हैं बल्कि अपने जीवन पद्धति और व्यवहार में भी धार्मिक क्रियाओं का अनुसरण करते हैं।

तो क्या यह मान लिया जाए कि पूरी दुनिया में धर्म के बिना काम नहीं चल सकता कुछ हद तक यह बात सही प्रतीत होती है। क्योंकि मनुष्य को नहीं पता के इस अखिल ब्रह्मांड का संचालन कौन और कैसे करता है जीवन के अनंत रहस्य उसे ज्ञात नहीं है। बस यही से धर्म या यूं कहें ईश्वर के अस्तित्व या उसके मानने की व्यवस्था भी आगे बढ़ जाती है। अल्बानिया की कम्युनिस्ट सरकार ने धर्म के खिलाफ बैन लगा दिया। धर्मगुरुओं को जेल भेजने लगा था लेकिन इस मुस्लिम-बहुल देश में तब भी लोग छिप-छिपकर अपने रीति-रिवाजों का पालन करते थे। 1976 में यूरोपियन देश अल्बानिया की पार्टी ऑफ लेबर ने देश को नास्तिक मुल्क घोषित कर दिया था। वहां के तानाशाह एनवर होक्सहा जो मार्क्स से सहमत थे कहा कि धर्म एक अफीम है, जिससे पूरा देश बर्बाद हो जाता है। बैन के साथ ही देश में किसी भी तरह की धार्मिक क्रिया पर पूरी तरह से रोक लग गई। होक्सहा का कहना था कि धर्म की बजाए लोग उस पर और पार्टी पर श्रद्धा रखें लेकिन यह आसान नहीं था और धर्म गायब हो जाए यह नामुमकिन था। नतीजन कम्युनिस्ट शासन के खात्मे के साथ ही यहाँ फिर से धार्मिक अधिकार और व्यवस्था बहाल हो गई। होक्सहा काल के दौरान कई फिल्में बनीं, जिसमें धर्म के कारण आने वाली बुराइयों के बारे में बात की गई थी, जैसे फ्रीडम आफ डेथ और टू डाई आन वन्स फीट। इन फिल्मों में बताया गया था कि पश्चिमी देशों के साथ मिलकर धर्म गुरु अपने ही देश के खिलाफ साजिश करते हैं। अल्बानिया में तब एक ही चैनल था, जो सरकारी था। इसमें ऐसी फिल्में लगभग रोज दिखाई जातीं ताकि हर कोई उसे देखे। इधर आज भारत सहित दुनिया भर में धर्म का विरोध करते हुए उसका मखौल उड़ाने वाली फिल्में खूब बन रही हैं और चल भी रही हैं।

अब दुनियाभर में नास्तिकता बढ़ रही है, तो अब क्या धार्मिक होना अतीत की बात हो जाएगी ? इस सवाल का जवाब मुश्किल नहीं, बहुत-बहुत मुश्किल है। कैलिफ़ोर्निया में क्लेरमोंट के पिटज़र कॉलेज में सामाजिक विज्ञान के प्रोफ़ेसर फिल ज़करमैन कहते हैं, "इस समय दुनिया में पहले के मुक़ाबले नास्तिकों की संख्या बढ़ी है, और लोगों में इनका प्रतिशत भी बढ़ा है।" इस समय दुनिया में नास्तिकों का आंकड़ा बढ़कर 13 प्रतिशत तक पहुँच गया है लेकिन इसमें किसी को भी हैरानी नहीं होनी चाहिए। नास्तिकों की संख्या में सबसे अधिक बढ़ोतरी उन देशों में हुई है जो अपने नागरिकों को आर्थिक, राजनीतिक और अस्तित्व की अधिक सुरक्षा देते हैं। जापान, कनाडा, ब्रिटेन, दक्षिण कोरिया, नीदरलैंड्स, चेक गणराज्य, एस्तोनिया, जर्मनी, फ्रांस, उरुग्वे ऐसे देश हैं जहाँ 100 साल पहले तक धर्म महत्वपूर्ण हुआ करता था, लेकिन अब इन देशों में ईश्वर को मानने वालों की दर सबसे कम है। इन देशों में शिक्षा और सामाजिक सुरक्षा की व्यवस्था काफ़ी मज़बूत है । न्यूज़ीलैंड की ऑकलैंड यूनिवर्सिटी के मनोवैज्ञानिक क्रेंटिन एटकिंसन कहते हैं, "असल में, लोगों में इस बात का डर कम हुआ है कि उन पर क्या बीत सकती है।" इसके उलट ब्रिटिश कोलंबिया यूनिवर्सिटी के सामाजिक मनोविज्ञानी एरा नोरेनज़ायन कहते हैं, "धर्म के प्रति आस्था में कमी का मतलब इसका ग़ायब हो जाना नहीं है।" लोग दुख से बचना चाहते हैं, जब वे इससे बाहर नहीं निकल पाते तो वे इसका अर्थ खोजना चाहते हैं। बस यहीं से धर्म, पीड़ा को अर्थ देने लगता है अर्थात मनुष्य को उसकी पीड़ा तकलीफ के कारण समझाने लगता है। सच तो यह है कि यदि दुनिया की सारी परेशानियां चमत्कारिक ढंग से हल हो भी जाएं तब भी धर्म हमारे आस-पास ही रहेगा। वास्तव में धर्म हमें दुनिया को बेहतर तरीक़े से समझने, प्राकृतिक आपदाओं या अपने क़रीबियों की मौत की घटनाओं को समझने में मदद करता है।

धार्मिक विचारों को अपनाना मनुष्य के लिए सबसे कम प्रतिरोध का रास्ता होता है। धर्म से छुटकारा पाने के लिए आपको मानवता में से अनेक मूलभूत बातों में बदलाव करने होते हैं जो काफी कठिन है। ईश्वर के प्रति आस्था की बात करें तो हालाँकि 20 प्रतिशत अमरीकी किसी चर्च से संबद्ध नहीं थे, लेकिन उनमें से 68 प्रतिशत ने माना कि उनका ईश्वर में विश्वास है और 37 प्रतिशत ने ख़ुद को धार्मिक बताया। वास्तव में धर्म, समूहों में सामंजस्य और सहयोग को बढ़ावा देता है। कथित लक्ष्मण रेखा को पार करने वालों पर सर्वशक्तिमान ईश्वर की नज़र पुराने समाज को व्यवस्थित रखने में मदद करती थी। यही आज भी परोक्ष रूप से सहायक है। विशेषज्ञों का मानना है कि मनोवैज्ञानिक, तंत्रिका विज्ञान, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और तार्किक, इन सभी कारणों को देखते हुए धर्म शायद कभी इंसानों से दूर नहीं जा सकेगा । धर्म, चाहे इसे डर या प्यार से बनाए रखा गया हो- खुद को बनाए रखने में अत्यधिक सफल रहा है। अगर ऐसा नहीं होता तो यह शायद हमारे साथ नहीं होता। यह जुदा बात है कि दुनियाभर में सत्ताएं भी धर्म की छाया में खूब फलती फूलती रही हैं जाहिर है वे इससे गठजोड़ तोड़कर कैसे छिटक सकती हैं।

राजेन्द्र मोहन शर्मा,
साहित्यकार, शिक्षाविद एवं चिन्तक

राशिफल गुरूवार 30 जून, 2022

पंडित अनिल शर्मा

आषाढ़ मास, शुक्ल पक्ष, प्रतिपदा तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2079, पुनर्वसु नक्षत्र रात्रि 1:07 तक, ध्रुव्र योग प्रात: 9:50 तक, बव करण दिन 10:50 तक, चन्द्रमा सांय 6:23 से कर्क राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-मिथुन, मंगल-मेष, बुध-वृष, गुरू-मीन, शुक्र-वृष, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से सम्पूर्ण दिन-रात रहेगा और अमृत सिद्धि, गुरू पुष्य योग रात्रि 1:07 से सूर्योदय तक है। आज चन्द्र दर्शन, श्रृंगोन्नति है। आज से गुप्त नवरात्र आरम्भ होंगे। आज मनोरथ द्वितीया (बंगाल में)।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 7:13 तक। चर 10:48 से 12:30 तक, लाभ-अमृत 12:30 से 3:55 तक, शुभ 5:38 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 5:40, सूर्यास्त 7:21

मेष
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिज्रनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

सिंह
आर्थिक/वित्तीय मामलों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी।

धनु
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

वृष
व्यावसायिक कार्य में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

मकर
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। उचित परामर्श मिलेगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे और नये व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

तुला
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आय में वृद्धि होगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

कर्क
व्यक्तिगत समस्याओं के कारण मानसिक तनाव रहेगा। मन में असंतोष बना रहेगा। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी।

वृश्चिक
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ने का भय ठुना रहेगा।

मीन
परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। अतिथियों के आगमन से परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक कार्य में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी।